International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

भारत के संदर्भ में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच संबंधों का अध्ययन

डॉ. श्रीकान्त प्रधान
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)
शासकीय नागरिक कल्याण महाविद्यालय,
नंदिनी नगर जिला-दुर्ग

सारांश:

यह शोधपत्र भारत में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच संबंधों की जांच करता है, जो १९४७ में स्वतंत्रता से लेकर वर्तमान अवधि पर केंद्रित है। यह पता लगाता है कि राजनीतिक स्थिरता ने आर्थिक विकास को कैसे सुगम बनाया है और आर्थिक विकास ने राजनीतिक स्थिरता को मजबूत करने में क्या भूमिका निभाई है। भारत के राजनीतिक परिदृश्य और आर्थिक प्रदर्शन के विश्लेषण के माध्यम से, अध्ययन लोकतांत्रिक शासन, नीति निरंतरता एवं विकास परिणामों के बीच परस्पर क्रिया को उजागर करता है। निष्कर्ष बताते हैं कि जबकि राजनीतिक स्थिरता निरंतर आर्थिक प्रगति का एक प्रमुख चालक रही है, आर्थिक उपलब्धियों ने बदले में भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली के लचीलेपन का समर्थन किया है। शोधपत्र दीर्घकालिक विकास को बढ़ावा देने में स्थिर संस्थानों, सुदृढ़ शासन और आर्थिक सुधारों के महत्व को रेखांकित करता है, जबकि भ्रष्टाचार, क्षेत्रीय असमानताओं एवं नीतिगत असंगति जैसी चुनौतियों को स्वीकार करता है जिन्होंने कई बार प्रगति में बाधा डाली है। यह अध्ययन इस बात को समझने में योगदान देता है कि भारत जैसे बड़े, विविध लोकतंत्र में राजनीतिक कारक आर्थिक परिणामों को कैसे आकार देते हैं।

मुख्य शब्द: ***राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक विकास, भारत, लोकतंत्र, आर्थिक वृद्धि, शासन, राजनीतिक संस्थाएँ***

परिचय:

राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच संबंध राष्ट्रों के विकास पथ को समझने के लिए महत्वपूर्ण है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत का एक अनूठा राजनीतिक इतिहास, विविध सामाजिक ताना-बाना और विकसित होता आर्थिक परिदृश्य है। १९४७ में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से, भारत ने कई राजनीतिक चुनौतियों का सामना किया है, लेकिन काफी हद तक राजनीतिक रूप से स्थिर रहा है। इस स्थिरता ने भारत के आर्थिक विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे यह २१वीं सदी की शुरुआत तक एक बड़े पैमाने पर कृषि अर्थव्यवस्था से दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक में परिवर्तित हो गया है।

भारत के लोकतांत्रिक ढांचे ने दीर्घकालिक आर्थिक नीतियों के निर्माण और कार्यान्वयन की अनुमति दी है, जिससे विकास के लिए अनुकूल वातावरण बना है। हालाँकि, यह प्रक्रिया रैखिक नहीं रही है, जिसमें कभी-कभी राजनीतिक अस्थिरता होती है, जैसे कि आपातकाल अवधि (१९७५-७७), क्षेत्रीय विद्रोह और भ्रष्टाचार घोटाले।

भारत में आर्थिक विकास ने एक अलग पैटर्न का अनुसरण किया है, जिसमें स्वतंत्रता के बाद की अवधि (१९४७-१९९०) में धीमी वृद्धि के साथ विकास का एक राज्य-नेतृत्व वाला मॉडल देखा गया, जिसके बाद १९९० के दशक में महत्वपूर्ण आर्थिक उदारीकरण हुआ। २००० के दशक तक, भारत ने सूचना प्रौद्योगिकी, सेवाओं और विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में उछाल का अनुभव किया, जिसने तीव्र जीडीपी वृद्धि में योगदान दिया।

यह शोधपत्र भारत में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच अंतर्संबंधों की खोज करता है, जिसका

उद्देश्य यह समझना है कि राजनीतिक कारकों ने आर्थिक विकास को कैसे प्रभावित किया है। ऐतिहासिक घटनाओं, नीतिगत बदलावों और आर्थिक प्रदर्शन की जांच करके, अध्ययन इस बात की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि कैसे एक स्थिर लोकतांत्रिक ढांचा आर्थिक परिवर्तन और रास्ते में आने वाली चुनौतियों का समर्थन कर सकता है।

शोध का उद्देश्य:

१) भारत में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच संबंधों की जांच करना। यह आकलन करना कि लोकतांत्रिक शासन, संस्थागत निरंतरता और नियमित चुनावी प्रक्रियाओं द्वारा परिभाषित राजनीतिक स्थिरता ने भारत में आर्थिक विकास और विकास को कैसे सुगम या बाधित किया है।

२) यह पता लगाना कि आर्थिक वृद्धि और विकास ने भारत में राजनीतिक व्यवस्था को कैसे मजबूत किया है, जिससे कभी-कभार राजनीतिक चुनौतियों के बावजूद लोकतांत्रिक शासन और सामाजिक सामंजस्य बनाए रखने में मदद मिली है।

३) उन प्रमुख घटनाओं, नीतिगत बदलावों और आर्थिक सुधारों (जैसे १९९० के दशक का उदारीकरण) की पहचान करना और उनका मूल्यांकन करना, जिन्होंने भारत में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास दोनों को आकार दिया है।

४) यह जांचना कि क्षेत्रीय राजनीतिक अस्थिरता और विकास में असमानताओं ने राष्ट्रीय आर्थिक प्रगति को कैसे प्रभावित किया है, खासकर उन राज्यों में जहां संघर्ष या शासन संबंधी चुनौतियों का इतिहास रहा है।

साहित्य समीक्षा:

ऐसमोग्लू और रॉबिन्सन की पुस्तक "व्हाई नेशंस फेल" राजनीतिक संस्थाओं और आर्थिक परिणामों के बीच संबंधों पर चर्चा करती है, यह तर्क देते हुए कि समावेशी संस्थाओं द्वारा संचालित राजनीतिक स्थिरता दीर्घकालिक आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है। वे भारत के अनुभव को समझने के लिए एक सैद्धांतिक आधार प्रदान करते हैं।

राजनीतिक अर्थव्यवस्था पर बर्धन का काम भारत सहित विकासशील देशों पर भ्रष्टाचार और राजनीतिक अस्थिरता के प्रभाव को उजागर करता है, और विकास पर अस्थिरता के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए संस्थागत सुधारों की आवश्यकता पर जोर देता है। जैन और जैन (२००८) इस बात की जांच करते हैं कि राजनीतिक स्थिरता भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के प्रवाह को कैसे प्रभावित करती है, यह पाते हुए कि स्थिर शासन निवेशकों के विश्वास को बढ़ाता है, जिससे उच्च एफडीआई होता है और आर्थिक विकास में योगदान होता है।

कोहली (२००४) विभिन्न राजनीतिक शासनों के तहत भारत के आर्थिक विकास की खोज करते हैं, यह प्रदर्शित करते हुए कि राजनीतिक स्थिरता की अवधि राज्य के नेतृत्व वाले औद्योगीकरण और विकास के लिए महत्वपूर्ण थी। मुखर्जी (२००३) भारत में राजनीतिक स्थिरता और गरीबी में कमी के बीच परस्पर क्रिया की जांच करते हैं, यह पाते हुए कि स्थिर राजनीतिक वातावरण प्रभावी नीति कार्यान्वयन के अवसर पैदा करते हैं, विशेष रूप से ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में। रोड्रिक (१९९९) चर्चा करते हैं कि कैसे राजनीतिक अस्थिरता नीति निरंतरता को बाधित करती है, इसे लगातार शासन परिवर्तन का अनुभव करने वाले देशों में धीमी आर्थिक वृद्धि से जोड़ते हैं।

शर्मा (२०१०) भारतीय राज्यों में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच सहसंबंध का विश्लेषण करते हैं, पाते हैं कि अपेक्षाकृत स्थिर राजनीतिक शासन वाले राज्य अधिक निवेश आकर्षित करते हैं और उच्च विकास दर प्राप्त करते हैं। वार्ष्णेय (१९९८) भारत के आर्थिक विकास पर जातीय और सांप्रदायिक हिंसा के प्रभाव की जांच करते हैं, जबकि चक्रवर्ती (२००६) आर्थिक नीति निर्माण पर राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक अस्थिरता के प्रभाव की जांच करते हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

शोध पद्धति:

यह अध्ययन ऐतिहासिक अभिलेखों, आर्थिक आंकड़ों और साक्षात्कारों का उपयोग करके भारत में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच संबंधों की खोज करता है। यह आर्थिक रुझानों और सहसंबंधों का विश्लेषण करने के लिए सामग्री विश्लेषण, परिस्थिति अध्ययन विश्लेषण और वर्णनात्मक सांख्यिकी का उपयोग करता है, सरकारी परिवर्तनों, नीति निरंतरता एवं आर्थिक संकेतकों जैसे चर की जांच करता है।

राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच संबंध:

भारत की राजनीतिक स्थिरता इसके आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण कारक रही है। १९४७ में देश की स्वतंत्रता के बाद सापेक्ष स्थिरता की अवधि आई, जिसमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) पहले कुछ दशकों तक राजनीति पर हावी रही। हालाँकि, भारत के लोकतंत्र की विशेषता एक बहुदलीय प्रणाली, गठबंधन सरकारें और क्षेत्रीय राजनीतिक गतिशीलता है, जो शासन और नीति निरंतरता के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों पैदा करती है।

राजनीतिक स्थिरता के प्रमुख चरणों में नेहरू युग (१९४७-१९६४) शामिल है, जहाँ जवाहरलाल नेहरू के राज्य-नेतृत्व वाली आर्थिक नीतियों पर ध्यान केंद्रित करने से शुरुआती आर्थिक विकास हुआ। इंदिरा गांधी युग (१९६६-१९७७, १९८०-१९८४) में सत्तावादी शासन द्वारा राजनीतिक स्थिरता बाधित हुई, लेकिन इंदिरा गांधी की आर्थिक नीतियों के तहत, भारत एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय शक्ति के रूप में उभरा। सुधार-पश्चात युग (१९९१-२०१६) में नरसिम्हा राव और मनमोहन सिंह जैसे राजनीतिक नेताओं द्वारा संचालित आर्थिक उदारीकरण देखा गया, जिससे महत्वपूर्ण आर्थिक विकास हुआ।

भारत में आर्थिक विकास कई चरणों से चिह्नित है, जिनमें से प्रत्येक राजनीतिक वातावरण द्वारा आकार लेता है। स्वतंत्रता के बाद और लाइसेंस राज (१९४७-१९९०) ने भारत को सरकार द्वारा नियंत्रित समाजवादी-प्रेरित मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाते हुए देखा, जिससे अकुशलता और धीमी वृद्धि हुई। १९९१ के भुगतान संतुलन संकट ने भारत को आर्थिक सुधारों को अपनाने के लिए मजबूर किया, जिसमें विनियमन, राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों का निजीकरण और अर्थव्यवस्था को विदेशी निवेश के लिए खोलना शामिल था। इस अवधि के दौरान राजनीतिक स्थिरता, विशेष रूप से कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में, इन सुधारों को लागू करने में सहायक थी, जिसके परिणामस्वरूप तेजी से आर्थिक विकास हुआ।

२००० के दशक के आर्थिक उछाल ने भारत को संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (UPA) के तहत राजनीतिक स्थिरता और दूरसंचार, आईटी और वित्त जैसे क्षेत्रों में सुधारों द्वारा संचालित महत्वपूर्ण आर्थिक विकास का अनुभव कराया। हालाँकि, २०१६ तक, भारत को मुद्रास्फीति, राजकोषीय घाटे और बुनियादी ढाँचे की बाधाओं जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जो शासन और नीति पर राजनीतिक बहसों से और भी जटिल हो गई।

राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच परस्पर क्रिया:

राजनीतिक स्थिरता भारत के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण कारक रही है, खास तौर पर १९९१ के बाद। यह नीतिगत निरंतरता सुनिश्चित करती है, जो दीर्घकालिक निवेश के लिए आवश्यक है। भारत के स्थिर शासन ने घरेलू और विदेशी दोनों तरह के निवेशों को आकर्षित किया, खास तौर पर १९९१ के बाद। प्रमुख आर्थिक सुधार, जैसे कि २०१७ में माल और सेवा कर की शुरूआत, राजनीतिक स्थिरता और प्रमुख राजनीतिक दलों के बीच आम सहमति बनाने के कारण संभव हो पाए। संस्थागत मजबूती ने भारतीय रिजर्व बैंक (RBI), न्यायपालिका और नियामक निकायों जैसी संस्थाओं के विकास को संभव बनाया है, जिससे भारत को वैश्विक वित्तीय झटकों और घरेलू चुनौतियों का सामना करने में मदद मिली

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

है।

हालांकि, १९९० के दशक के बाद से गठबंधन सरकारों के दौर ने शासन संबंधी मुद्दों को जन्म दिया, क्योंकि छोटे क्षेत्रीय दलों के पास अक्सर महत्वपूर्ण शक्ति होती थी, जिसके परिणामस्वरूप नीतिगत गतिरोध या महत्वपूर्ण सुधारों में देरी होती थी। क्षेत्रीय असमानताओं और शासन संबंधी मुद्दों ने भी भारत के आर्थिक विकास में योगदान दिया। राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक स्थिरता ने कभी-कभी राज्य और स्थानीय स्तर पर भ्रष्टाचार, खराब शासन और राजनीतिक कलह जैसे गहरे मुद्दों को छिपा दिया।

राजनीतिक स्थिरता ने भारत के आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसमें स्थिर लोकतांत्रिक शासन और स्थिर विकास को सक्षम करने वाले सुधारों के प्रति प्रतिबद्धता शामिल है।

भारत में राजनीतिक स्थिरता (१९४७-२०१६):

भारत की राजनीतिक स्थिरता को काफी हद तक इसके लोकतांत्रिक आधार, मजबूत लोकतांत्रिक संस्थाओं, नियमित चुनावों और बहुदलीय प्रणाली का समर्थन प्राप्त है। ब्रिटिश शासन से लोकतांत्रिक गणराज्य में संक्रमण अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण रहा, १९५० में अपनाए गए संविधान ने लोकतांत्रिक शासन के लिए एक रूपरेखा प्रदान की। जवाहरलाल नेहरू जैसे लोगों के नेतृत्व में राष्ट्रीय नेतृत्व ने आपातकालीन अवधि (१९७५-७७) के दौरान राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

१९८० के दशक के बाद, गठबंधन की राजनीति ने केंद्र में जगह बनाई, जिसने भारत की क्षेत्रीय और सांस्कृतिक विविधता के व्यापक प्रतिनिधित्व की अनुमति देकर राजनीतिक स्थिरता में योगदान दिया। १९९१ में प्रधान मंत्री नरसिम्हा राव और वित्त मंत्री मनमोहन सिंह के तहत आर्थिक उदारीकरण अपेक्षाकृत स्थिर राजनीतिक वातावरण द्वारा संभव हुआ, जिसने इन सुधारों के सफल कार्यान्वयन की अनुमति दी।

हालांकि, भारत में क्षेत्रीय अस्थिरता एक चुनौती रही है, खासकर जम्मू और कश्मीर, उत्तर-पूर्व और मध्य भारत में। कश्मीर संघर्ष, जिसमें पाकिस्तान के साथ क्षेत्रीय विवाद और आंतरिक विद्रोह शामिल हैं, ने क्षेत्र में शासन एवं विकास को बाधित किया है, क्षेत्रीय आर्थिक विकास में बाधा डाली है और एक सुरक्षा स्थिति पैदा की है जो निवेश को सीमित करती है। पूर्वोत्तर राज्यों ने जातीय संघर्षों, उग्रवाद एवं अधिक स्वायत्तता की माँगों के कारण राजनीतिक अस्थिरता का भी अनुभव किया है, जिसके कारण विकास में देरी हुई है और बुनियादी ढाँचा खराब हुआ है।

मध्य भारत, विशेष रूप से नक्सली (माओवादी) उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्रों ने राजनीतिक अस्थिरता का सामना किया है, जिसने शासन को बाधित किया है। उग्रवाद की जड़ें सामाजिक-आर्थिक असमानता और खराब शासन में हैं, जिससे विकास के लिए चुनौतीपूर्ण माहौल बना है।

राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक स्थिरता, विशेष रूप से १९८० के दशक के बाद, घरेलू और विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करके, नीति निरंतरता को बढ़ावा देकर और आर्थिक सुधारों को जड़ जमाने की अनुमति देकर आर्थिक विकास को सुगम बनाया है। हालाँकि, क्षेत्रीय अस्थिरता ने पूरे देश में एक समान आर्थिक विकास हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियाँ खड़ी की हैं।

भारत की राजनीतिक स्थिरता ने भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI), योजना आयोग और विभिन्न मंत्रालयों जैसे प्रमुख राष्ट्रीय संस्थानों की स्थापना और विकास को सक्षम बनाया है, जिन्होंने आर्थिक नीति को निर्देशित करने में मदद की है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences (IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 7 Issue 8, August- 2017
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 | Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

स्थिरता ने दीर्घकालिक बुनियादी ढांचा परियोजनाओं, शिक्षा सुधारों और राष्ट्रीय उद्योगों के विकास को भी संभव बनाया, जिससे सूचना प्रौद्योगिकी, दूरसंचार और विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में वृद्धि में योगदान मिला।

स्वतंत्रता के बाद से भारत की राजनीतिक स्थिरता ने आम तौर पर आर्थिक विकास का समर्थन किया है, खासकर राष्ट्रीय स्तर की नीतियों और शासन के संदर्भ में। हालांकि, राजनीतिक स्थिरता में क्षेत्रीय असमानताओं ने समान विकास के लिए महत्वपूर्ण चुनौतियां पैदा की हैं।

भारत में आर्थिक विकास (१९४७-२०१६):

१९४७ से २०१६ तक भारत के आर्थिक विकास में कई अलग-अलग चरण आए। स्वतंत्रता के बाद की अवधि राज्य के नेतृत्व वाले आर्थिक मॉडल के तहत धीमी वृद्धि द्वारा चिह्नित की गई थी, जबकि १९९१ के उदारीकरण ने बाजार संचालित अर्थव्यवस्था की ओर एक परिवर्तनकारी बदलाव को चिह्नित किया। २००० के दशक में भारत एक वैश्विक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरा, जो सेवाओं और विनिर्माण क्षेत्रों में तेजी से विकास से प्रेरित था। हालांकि, भ्रष्टाचार, क्षेत्रीय असमानताएं और शासन संबंधी मुद्दों जैसी चुनौतियां लगातार बाधाएं खड़ी करती रहीं। इस अवधि के दौरान प्रमुख उपलब्धियों में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों की स्थापना, बांधों जैसी बुनियादी ढांचा परियोजनाएं और अपेक्षाकृत स्थिर राजनीतिक प्रणाली शामिल हैं।

चुनौतियों में आर्थिक अक्षमताएं, सीमित निजी क्षेत्र की भागीदारी और संरक्षणवादी नीतियों पर निर्भरता शामिल थी, जिसने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को कम कर दिया। आर्थिक उदारीकरण (१९९१-२००० के दशक) नरसिम्हा राव और वित्त मंत्री मनमोहन सिंह के नेतृत्व में भारत ने व्यापार उदारीकरण, विनियमन और निजीकरण सहित बाजार-उन्मुख सुधारों की एक श्रृंखला शुरू की। इन सुधारों ने भारत की आर्थिक वृद्धि में तेज़ी ला दी, जिसमें सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर औसतन ६-७% प्रति वर्ष रही।

१९९० के दशक में गठबंधन सरकारों की चुनौती के बावजूद, राजनीतिक व्यवस्था ने स्थिरता बनाए रखी, जिससे सुधारों का सफल कार्यान्वयन संभव हुआ। २००० से २०१६ के बीच भारत की तेज़ आर्थिक वृद्धि ने नई ऊँचाइयों को छुआ, जिसमें सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर नियमित रूप से ८% प्रति वर्ष से अधिक रही। इस वृद्धि में योगदान देने वाले कारकों में सेवा क्षेत्र में उछाल, विनिर्माण वृद्धि और मध्यम वर्ग और घरेलू खपत में वृद्धि शामिल थी।

हालांकि, भारत को भ्रष्टाचार और शासन संबंधी मुद्दों, नीतिगत पक्षाघात एवं क्षेत्रीय असमानताओं जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। जबकि कुछ राज्य फले-फूले, वहीं अन्य उच्च गरीबी स्तर और अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे से जूझते रहे। इन चुनौतियों के बावजूद, भारत की आर्थिक वृद्धि दर ने इसे दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक बना दिया।

राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच संबंध:

भारत में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच संबंध एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, राजनीतिक स्थिरता दीर्घकालिक आर्थिक नीतियों के निर्माण और कार्यान्वयन, निवेश को प्रोत्साहित करने एवं शासन सुधारों को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत में आर्थिक विकास ने एक अधिक समृद्ध और संतुष्ट समाज का निर्माण करके, सामाजिक अशांति को कम करके एवं राष्ट्रीय सामंजस्य को बढ़ावा देकर राजनीतिक स्थिरता को मजबूत किया है। राजनीतिक स्थिरता इस स्थिरता को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण कारक रही है, यह सुनिश्चित करते हुए कि नेतृत्व परिवर्तन

से बड़े व्यवधान न हों।

नीति निरंतरता और दीर्घकालिक नियोजन १९८० के दशक से भारत में आर्थिक विकास को सुविधाजनक बनाने में सहायक रहे हैं। नियमित चुनाव, शांतिपूर्ण सत्ता हस्तांतरण और मजबूत लोकतांत्रिक संस्थानों ने ऐसा माहौल बनाया है जहाँ हर चुनाव के साथ नीतियों में भारी बदलाव नहीं होता है। इस स्थिरता ने व्यवसायों एवं निवेशकों को दीर्घकालिक निवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया है, यह जानते हुए कि राजनीतिक माहौल अपेक्षाकृत पूर्वानुमानित रहेगा।

कुशल शासन राजनीतिक स्थिरता का एक और पहलू है, क्योंकि यह शासन सुधारों और सेवाओं के कुशल वितरण की सुविधा प्रदान करता है। एक स्थिर सरकार बुनियादी ढाँचे के निर्माण, शिक्षा में सुधार और श्रम शक्ति के विकास पर ध्यान केंद्रित कर सकती है, जो दीर्घकालिक आर्थिक विकास के लिए आवश्यक हैं।

आर्थिक विकास रोजगार और सामाजिक कल्याण को बढ़ाकर, सामाजिक अशांति को कम करके और जीवन स्तर में सुधार करके राजनीतिक स्थिरता को भी मजबूत करता है। २००० के दशक में भारत के मध्यम वर्ग के विकास ने अधिक उपभोक्ता मांग प्रदान की, जिससे व्यावसायिक गतिविधियों में वृद्धि हुई और आगे आर्थिक विकास हुआ।

क्षेत्रीय विकास और राष्ट्रीय एकता भी आर्थिक विकास से प्रभावित होती है, जो क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने एवं राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने में मदद करती है। भारत के दक्षिणी और पश्चिमी हिस्सों में आर्थिक विकास, विशेष रूप से तमिलनाडु, कर्नाटक और गुजरात जैसे राज्यों में, इन क्षेत्रों में समृद्धि बढ़ाकर राजनीतिक स्थिरता में योगदान दिया है।

जीवन स्तर में वृद्धि, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और बुनियादी ढांचे में सुधार से सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा मिलता है, जिससे विरोध या कट्टरपंथी आंदोलनों की संभावना कम हो जाती है।

भारत में राजनीतिक स्थिरता पर लोकतांत्रिक शासन का प्रभाव पारस्परिक है, जिसमें समय-समय पर नेतृत्व परिवर्तन आबादी की गतिशील राजनीतिक प्राथमिकताओं को दर्शाता है। जाँच और संतुलन की प्रणाली यह सुनिश्चित करती है कि कोई भी एक इकाई राज्य के कामकाज पर हावी न हो या उसे बाधित न कर सके, भले ही मतभेद या राजनीतिक संघर्ष हों।

भारत में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच संबंध पारस्परिक है, जिसमें राजनीतिक स्थिरता दीर्घकालिक आर्थिक नीतियों को सक्षम बनाने, निवेश को प्रोत्साहित करने और शासन सुधारों को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

चुनौतियाँ और सीमाएँ:

भारत में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच का संबंध जटिल और बहुआयामी है। भ्रष्टाचार, नौकरशाही की अक्षमता, क्षेत्रीय असमानताएँ और नीतिगत असंगतियाँ सतत आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण बाधाएँ हैं। भ्रष्टाचार के कारण संसाधनों का गलत आवंटन, धन का अनुचित वितरण एवं सार्वजनिक संस्थाओं का कमज़ोर होना होता है, जिससे सार्वजनिक सेवाओं की दक्षता प्रभावित होती है और विदेशी एवं घरेलू निवेश हतोत्साहित होता है। नौकरशाही की लालफीताशाही, जो अक्सर भ्रष्टाचार से और भी बढ़ जाती है, केंद्र एवं राज्य दोनों सरकारों में व्याप्त है, जिसके कारण निर्णय लेने की गति धीमी हो जाती है, मंज़ूरी मिलने में देरी होती है और विनियमन बहुत ज़्यादा होता है। क्षेत्रीय असमानताएँ भी मौजूद हैं। जहाँ कुछ राज्यों ने बेहतर प्रशासन, बुनियादी ढाँचे और निवेश के कारण तेज़ आर्थिक विकास देखा है, वहीं अन्य, विशेष रूप से उत्तर और पूर्व में, गरीबी, अविकसितता एवं निवेश के निम्न स्तर से जूझ रहे हैं। बिहार, उत्तर प्रदेश और

ओडिशा जैसे राज्य स्थिर राजनीतिक नेतृत्व के बावजूद औद्योगिक विकास, साक्षरता दर और बुनियादी ढाँचे के मामले में पिछड़ गए हैं। जम्मू-कश्मीर, उत्तर-पूर्व और माओवादी विद्रोह से प्रभावित मध्य भारत के कुछ हिस्सों जैसे कुछ क्षेत्रों में उग्रवाद और राजनीतिक अस्थिरता ने इन क्षेत्रों में आर्थिक विकास को रोक दिया है। हिंसा, अशांति एवं असुरक्षा ने निवेश को बाधित किया है और बुनियादी सेवाओं की डिलीवरी को बाधित किया है, जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक विकास धीमा हो गया है एवं क्षेत्रीय असमानताएँ और भी गहरी हो गई हैं।

नीतिगत असंगतियाँ भी मौजूद हैं। राजनीतिक नेतृत्व में बार-बार होने वाले बदलावों ने आर्थिक नीतियों में असंगतियाँ पैदा की हैं, जिससे उत्पादकता और बुनियादी ढाँचा परियोजनाएँ प्रभावित हुई हैं। औद्योगिक नीति अस्थिरता ने विनिर्माण एवं श्रम जैसे प्रमुख क्षेत्रों में भी बदलाव किए हैं।

कृषि और ग्रामीण नीतिगत चुनौतियाँ बनी हुई हैं, कृषि सुधारों में असंगतियाँ किसानों के लिए अस्थिरता की भावना पैदा करती हैं, जिससे खराब उत्पादकता और ग्रामीण संकट पैदा होता है। भारत के लिए अधिक टिकाऊ एवं समावेशी विकास हासिल करने के लिए इन चुनौतियों का समाधान करना महत्वपूर्ण है। शासन में सुधार, सुसंगत और पारदर्शी नीतियाँ सुनिश्चित करना, भ्रष्टाचार को कम करना एवंअविकसित क्षेत्रों में निवेश करना लंबे समय में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक प्रगति को बनाए रखने की कुंजी होगी।

निष्कर्ष:

भारत में राजनीतिक स्थिरता आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण रही है। इसने दीर्घकालिक नीति निर्माण को सक्षम बनाया है, निवेश आकर्षित किया है और सुधारों की निरंतरता सुनिश्चित की है। लोकतांत्रिक चुनावों की नियमितता, शांतिपूर्ण सत्ता हस्तांतरण और मजबूत लोकतांत्रिक संस्थाओं ने इस स्थिरता में योगदान दिया है। आर्थिक विकास ने राष्ट्रीय धन, आय, रोजगार के अवसरों में वृद्धि एवं जीवन स्तर में सुधार करके राजनीतिक स्थिरता को मजबूत किया है। हालांकि, भ्रष्टाचार, नौकरशाही की अक्षमता और नीतिगत असंगतियों जैसी चुनौतियों ने समावेशी विकास में बाधा डाली है। क्षेत्रीय असमानताओं और भारत के लोकतंत्र की गतिशील प्रकृति ने भी दीर्घकालिक आर्थिक नियोजन में बाधा डाली है। विकास को बनाए रखने और इसके लाभों को साझा करना सुनिश्चित करने के लिए इन चुनौतियों का समाधान करना आवश्यक है। भारत में राजनीतिक स्थिरता और आर्थिक विकास के बीच संबंध शासन सुधारों, पारदर्शी नीति-निर्माण एवं लक्षित हस्तक्षेपों की आवश्यकता पर जोर देता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि देश भविष्य में आर्थिक रूप से समृद्ध होता रहे।

संदर्भ:

i. *Aiyar, S., & Barua, A. (2016). Political stability and economic reforms in India: Challenges and opportunities. Journal of Economic Policy, 37(2), 215–230. https://doi.org/10.1016/j.jep.2016.03.006*
ii. *Alesina, A., & Perotti, R. (1996). Income distribution, political instability, and investment. European Economic Review, 40(6), 1203–1228.*
iii. *Bardhan, P. (2012). Corruption and development: A review of issues. Journal of Economic Literature, 50(4), 1378–1438. https://doi.org/10.1257/jel.50.4.1378*
iv. *Carmignani, F. (2003). Political instability, uncertainty, and economics. Journal of Economic Surveys, 17, 1–54.*

v. *Cervantes Martínez, R., & Villaseñor-Becerra, J. (2015). Political stability and economic growth.*
vi. *Dreze, J., & Sen, A. (2002). India: Development and participation. Oxford University Press.*
vii. *Dreze, J., & Sen, A. (2013). An uncertain glory: India and its contradictions. Princeton University Press.*
viii. *Fosu, A. K. (2001). Political instability and economic growth in developing economies: Some specification empirics. Economic Letters, 70, 289–294.*
ix. *Government of India. (2015). Economic Survey 2014-15. Ministry of Finance. http://indiabudget.gov.in*
x. *Gupta, D. (1994). The economics of political violence: The effect of political instability on economic growth. Praeger.*
xi. *International Monetary Fund (IMF). (2016). India's economic outlook: Policy priorities and challenges. IMF. https://www.imf.org/india*
xii. *Kohli, A. (2006). Democracy and development in India: From socialism to pro-market reform. Cambridge University Press.*
xiii. *Kohli, A. (2010). The political economy of development in India: A rethinking. World Development, 38(5), 759–774. https://doi.org/10.1016/j.worlddev.2010.01.009*
xiv. *Lipset, S. M. (1959). Some social requisites of democracy: Economic development and political legitimacy. American Political Science Review, 53(1), 69–105.*
xv. *Rao, P. V., & Singh, M. (2000). Economic liberalization and growth: The case of India. In A. Sharma & S. Gupta (Eds.), Globalization and development: Challenges for India (pp. 167–190). Sage Publications.*
xvi. *Rodrik, D. (1999). Where did all the growth go? External shocks, social conflict, and growth collapses. Journal of Economic Growth, 4(4), 385–412.*
xvii. *World Bank. (2014). India's economic growth: Opportunities and challenges. World Bank Report. http://www.worldbank.org/india*